ISSN 2347-2723 Impact Factor : 2.0210 (UIF) Volume - 3 | Issue -10 | May - 2016

Review of Literature

संयुक्त राष्ट्र में भारत की भूमिका

प्रा. डॉ. राजेंद्र नामदेवराव मोरे
एम.ए., सेट., नेट .,एम.फिल.,पीएच.डी. संशोधक मार्गदर्शक,
राज्यशास्त्र विभाग, संत रामदास महाविद्यालय ,
घनसावंगी जि. जालना.

प्रस्तावना:—

भारत संयुक्त राष्ट्र संघ के स्थापना (२४ अक्टूबर १९४५) के प्रारम्भिक सदस्यों में से एक है| स्वतंत्रता के बाद भारत सदस्य राष्ट्र के रूप में शामिल हुआ | सदस्यता ग्रहन करने के बाद भारत की भूमिका संयुक्त राष्ट्र में काफी महत्वपूर्ण रही है और भारत की गिनती उन गिने-चुने सदस्य राष्ट्रों में है जो इसे शक्तिशाली एवं प्रभावकारी बनाना चाहते है |

भारतीय विदेश निती के आधारभूत सिध्दांत गुटनिरपेक्षता एवं शांतिपूर्ण सहअस्तित्व रहा है, जिसके माध्यम से भारत दुनिया में शांती एवं सुव्यवस्था स्थापित करना चाहता है | भारत के द्वारा शांती व सुव्यवस्था के प्राप्त करने के लिए जातिवाद, नक्सलवाद, सम्प्रदायवाद, रंगभेद उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद एवं आर्थिक शोषण का डटकर विरोध किया | भारत ने आन्तरराष्ट्रीय स्तर पर बराबर ही इन विषमाताओं के विरूद्ध आवाज उठाई है | भारत के द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ के विश्व शांति एवं सुरक्षा लाने के तमाम प्रयत्नों में नि:संकोच एवं तहदिल से सहायता की है | भारत संयुक्त राष्ट्र की तमाम गतिविधियों में भाग लेता रहा है, जिसमें उसे भौगोलिक स्थिती, आबादी और शांतीपूर्ण विकास में मदद मिल सके |

संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत की भूमिका स्पष्ट करने से पहले कुछ प्रश्न उपस्थित किये जाते है, उन्ही प्रश्नों के अनुसार उत्तर खोजने का प्रयास करके निष्कर्षतक जा सकते है |

वह प्रश्न है -१) क्या भारत की संयुक्त राष्ट्रसंघ में भूमिका सराहनीय है ? २) क्या भारत का संयुक्त राष्ट्र संघ पर विश्वास है ? उपरोक्त दो प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास किया जाएगा | आज के स्थिती में भारत की सकारात्मक भूमिका क्या है इसका विश्लेषण किया जाएगा |

संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न अंगो के संचालन में भारतीयों की सेवाए बडी महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय है | इसके अतिरिक्त भी हजारो भारतीय वैज्ञानिक, डॉक्टर, तकनीकी विशेषज्ञ संयुक्त राष्ट्र संघ की विभिन्न सेवाओं में रहकर इसको सफल बनाने के महत्वपूर्ण मिशन में कार्यरत है |१

भारत ने शुरू से ही संयुक्त राष्ट्र संघ में अफ्रो-एशियाई एवं अमरीकी महाद्वीप देशों में विद्यमान उपनिवेशवाद के खिलाफ आवाज उठाई और उसे 'मानवीय गरीमा' की संज्ञा दी है | भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ में उपनिवेशवाद के खिलाफ प्रस्ताव रखा, जिसे आमसभा द्वारा स्वीकार कर लिया गया | इतना ही नही भारत ने दक्षिण आफ्रीका में भारतीय मूल के निवासियों के प्रति जातिभेद पर सवाल उठाया तब संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा रंगभेद आधारित भेदनिती को मानवता के खिलाफ बताया एवं संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के खिलाफ बताया| भारत ने अपने कूटनितिक, आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध तोड लिए |

भारत ने सर्वप्रथम लडाई इंडोनेशिया को आजादी दिलाने के रूप में लढी | इसी प्रकार ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर नेदरलँड के खिलाफ आवाज उठाई | बांग्लादेश को स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित करने की भारत की कार्यवाही भी UNO के उद्देशों के अंतर्गत ही की गई थी | अमेरिका द्वारा लिबीया पर हमले की भारत की ओर से खुलकर निंदा की गयी | नामीबिया को आजादी दिलाने के तुरंत बाद वहां की सरकार को मान्यता देने में भी भारत विश्व के अग्रणी देशों में रही है |२

आन्तरराष्ट्रीय शांती व सुरक्षा भारत का महत्वपूर्ण व सराहनीय योगदान रहा है | १९५० के दशक में भारत ने कंबोडिया, कोरिया, वियतनाम तथा लेबनान आदी देशों में शांती स्थापना के लिए कार्यवाही में भाग लिया | भारतीय सैनिकों ने संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यवाही में शामिल होकर कोरीया, मिस्र, सीरिया, गाजापट्टी, कांगो, साइप्रस, यमन, रवण्डा, बोस्निया, सोमालिया, नामीबिया देशों में शांती स्थापित करने हेतू महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है |

आन्तरराष्ट्रीय राजनिती में भारत ने दो देशों के बीच उत्पन्न होनेवाली समस्याओं के समाधान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है | कोरिया, हिंद-चीन, वियतनाम,स्वेज, हंगेरी, काँगो, सिरिया, तुर्की विवाद अल्जीरिया आदी संकटों के दौरान युद्ध भडकानेवाली ज्वाला को भारत जैसे शांतीप्रिय राष्ट्र ने अपनी कूटनिती व सुझबूझ के बल पर शांत किया |३

निरस्त्रीकरण में भारत आपना पूरा योगदान देता है | १९९३ में भारत ने रासायनिक हथियारों पर नियंत्रण करनेवाली संधी पर हस्ताक्षर किये लेकिन CTBT पर हस्ताक्षर नहीं किये क्यों कि यह संधी भेदभाव पर आधारित थी | हथियारों रहित यानी शांतीपूर्ण विश्व स्थापना के क्रम में भी भारत की अग्रणी भूमिका रही है | सन १९६३ में जब परिक्षणों पर आंशिक प्रतिबंध की संधी हुई तो उस पर हस्ताक्षर करनेवाला भारत भी था | १३ वे अधिवेशन में भारत ने नि:शस्त्रीकरण के संदर्भ सुझाव प्रस्तुत किये | जून १९६८ मे प्रस्तावित परमाणू अप्रचार संधी पर भारत ने कतिय कारणों से हस्ताक्षर करने से इन्कार किया|४

परमाणू संपन्न राष्ट्र की शस्त्रीकरण संदर्भ में भेदनिती का विरोध किया | सीटी बीटी पर भारत ने हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया क्यों की भारत के अनुसार व्यापक परिक्षण प्रतिबंध संन्धि को सार्थक बनाने के लिए यह जरूरी है की इसे विश्वव्यापी निरस्त्रीकरण के साथ जोडा जाए |

संयुक्त राष्ट्र संघ ने आर्थिक व सामाजिक कार्यों में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है | इसके विभिन्न संगठनों ने श्रमिक संगठण, युनेस्को, विश्व स्वास्थ्य संगठण, आदी विभिन्न कार्यक्रम चलाए इसमें भारत की सहयोगात्मक भूमिका रही |५

विश्व में मानवाधिकार के उल्लंघन के अंतर्गत राजनितिक प्रतिद्वन्दियों को अनावश्यक रूप से सताया जाता, उनकी हत्या करना, दासता, भुखमरी का जीवन जीने के लिए विवश करना, धर्म के आड में मृत्यूदंड व छोटे छोटे अपराध के लिए कोडे लगाना, पत्थर मारना, हाथ पैर काटना, महिलाओं और बच्चो को बेच देना आदि मामले प्रकाश में आते रहे है | इस संबंध में भारत ने सदैव प्रयास किया है की UNO मानवाधिकार के लिए कारगर कदम उठाये और कार्यवाही करे |

सुरक्षा परिषद के संबंध में भारत महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुका है | भारत ने सुरक्षा परिषद का लोकतंत्रीकरण करने हेतु इसके पुनर्गठन के लिए निरंतर दबाव डाला है | इसके लिए जर्मनी, भारत, ब्राझील, दक्षिण आफ्रिका कर ग्रुप तैयार किया है | जनसंख्या, भौगोलिक क्षेत्र, आशिया में स्थान, अवकाश तंत्रज्ञान की प्रगती, सैनिकी क्षमता, लोकतंत्र आधार पर भारत ने सुरक्षा परिषद में अपनी दावेदारी मजबूत की है |६ साथ साथ नयी आर्थिक व्यवस्था के लिए आवाज बुलंद की है | विकसित देशोद्वारा विकसनशील देशों का आर्थिक शोषण किया जाता रहा है, उसे रोकने के उपायों तथा इसके समाधान के लिए अपनी सक्रीयता UNO में बढाई | विभिन्न अभिकरणों के हरसंभव सहयोग दिया और अपनी सक्रिय भूमिका का सफल निर्वाह किया है |

निष्कर्ष :

विवेचनोपरान्त स्पष्ट है की, विश्वशांती एवं सुरक्षा कायम करने के उद्देश्य से स्थापित संयुक्त राष्ट्र संघ का भारत प्रबल समर्थक रहा है | भारत ने नवोदित राष्ट्रों की आवाज को आन्तरराष्ट्रीय राजनिती में महत्व प्रदान कराया है और उनके समक्ष आन्तरराष्ट्रीय गुटबन्धी से अलग वैदेशिक निती का विकल्प प्रस्तुत किया है | भारत ने आन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में तनाव कम करके शांती स्थापित करने का प्रयास किया है | संयुक्त

राष्ट्र संघ में भारत की जनहितकारी भूमिका रही है, जिसे पूरा विश्व समाज स्वीकार करता है | भारत की संयुक्त राष्ट्र संघ में और प्रभावकारी भूमिका निभाने हेतू इसे सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बना दिया जाए जो भारत की औचित्यपूर्ण एवं सही माँग भी है |

१. डॉ. बी.एल. फडिया, आन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन प्रकाश आगरा, २०१२ पृ. ३६१
२. (संपादक) एन.एन.ओझा, राजनीति विज्ञान, क्रॉनिकल बुक्स, नयी दिल्ली,२००५ पृ. ४६०
३. अशोक कुमार, राजनिती विज्ञान, उपकार प्रकाशन आग्रा पृ.क्र.५४३.
४. डॉ. बी.एल. फडिया, कित्ता क्र. १ पृ. ३६३
५. संपादक एन.एन.ओझा पुर्वोक्त क्र.२, पृ. ४६१.
६. कित्ता पृ.क्र. ४६१, ४६२.